International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

समाज में संस्कारों की भूमिका

प्रतिमा कुमारी
पूर्व शोध–छात्रा,
संकाय सामाजिक विज्ञान,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत।

समाज एवं संस्कार –समाज एवं संस्कार एक दूसरे के परिपोषक होते है। संस्कार के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है एवं समाज के बिना संस्कारों का कोई मूल्य नहीं है। मानवें को मानवें के समूह मात्र को ही समाज नहीं कहते हैं बल्कि सभ्य तथा शिक्षित वर्ग को ही समाज शब्द से परिभाषित करते हैं। जिसमें प्रत्येक अवयव का सामूहिक रूप से योगदान होता है। कई परिवारों के समूह को ही समाज कहते हैं। परिवारों में रिश्तों का सूत्र एक अहम कड़ी है जो कि परिवार एवं समाज को जोड़कर रखती है। इसीलिए रिश्तों में तथा परिवारों में बुजुर्गों द्वारा संस्कार का बीजारोपण किया जाता है। जिसमें सर्वप्रथम नई पीढ़ी को दृष्टि में रखकर मूल्यों की स्थापना की जाती है। जिसमें शैक्षिक, नैतिक, सामाजिक, व्यवहारिक मूल्य समाहित होते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने वाली क्रिया संस्कार के ही अंश होते हैं। किसी भी कार्य व्यवस्थित ढंग से संपादन करना संस्कार को दर्शाता है। यही संस्कार हमारे समाज के विकास में कारण होता है।

संस्कारों को जानने के लिए संस्कृत में कई धर्म ग्रंथ हैं। उन संस्कारों के आधार पर पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। कभी–कभी समाज में आने वाले परिवर्तन कारण संस्कार में भी लोप दिखाई पड़ता है। जिसका दुष्प्रभाव समाज को कभी–कभी घटनाओं से दूषित कर देता है। इसीलिए सुदृढ़ समाज की कल्पना संस्कारों पर आधारित रहती है। अतः सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि संस्कारों को किस प्रकार से अपने आप में संवर्धन करें? इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से है कि व्यक्तित्व प्रति व्यक्ति भिन्न होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह व्यक्ति संस्कारों से युक्त नहीं है। जिस प्रकार से सिक्के के दो

पहलू होते हैं ठीक उसी प्रकार से अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व दो प्रकार के होते ह। इसीलिए सभ्य समाज में संस्कारों की अहम भूमिका होती है।

समाज में विभिन्न प्रकार के लोग – धर्म, जाति, वर्ग एवं विचार के अनुसार समाज में विभिन्न प्रकार के लोग निवास करते हैं। कई बार ऐसा देखा गया है कि एक दूसरे के विचार रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, उपासना, रुचि आदि विपरीत होते हैं; एक दूसरे से अलग होते हैं। किंतु विशेष अवसर पर किसी एक जगह सबका सम्मेलन होता है, जिसमें बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक तथा पुरुषों से लेकर स्त्रियों तक तथा सज्जनों से लेकर दुर्जनों तक, सभी उपस्थित रहते हैं। यह एक समाज के भिन्न वर्गों को, भिन्न जाति के लोगों को, भिन्न समुदाय के लोगों को तथा भिन्न धर्म के लोगों को समाज की एक विशेष कड़ी में जोड़ता है। जिसका मूल कारण समाज की प्रभुता है। कभी–कभी हम दुर्जनों से भी समाज में सज्जनों की सज्जनता की कामना करते हैं जिससे समाज का चरित्र उभरकर सामने आता है। अक्सर समाज को सही दृष्टि देने के लिए कुछ श्रेष्ठ संत जन हमेशा अपनी वाणी, विचारों से तथा कर्मों से समाज के सभी वर्गों को प्रेरित करते रहते हैं।

समाज का परिवेश – वर्तमान समय में समाज का परिवेश बड़ा विचित्र दिखता है जो कि उससे पहले ऐसा नहीं था। समाज नाम मात्र से यह पता चलता था कि समाज का मुखिया एवं समाज में रहने वाले व्यक्ति सभ्य होते हैं। प्रायः यह बात प्रसिद्ध थी। किंतु समय के चक्र ने समाज को अलग ही दिशा प्रदान की। जिसे हम समाज भी नहीं कह सकते है। आधुनिक समय में महत्वाकांक्षाओं की दौड़ में व्यक्ति समाज से बहुत भी दूर चला गया है। जहाँ समाज तो है किंतु समाज का स्वरूप बड़ा ही विचित्र है। जैसे पहले के समाज में लोग आपस में अपने सुख–दुख की बातें करते थे और लोग एक दूसरे की मदद करने को हमेशा तत्पर रहते थे। आज के समाज में लोग एक जगह इकट्ठा तो होते हैं और अपने सुख–दुख को मन में दबाकर झूठा दिखावा करते हैं। बड़े–बड़े समारोह में अजीबोगरीब नृत्यों का प्रदर्शन करते हैं। इतना ही नहीं अपनी मान मर्यादा को ध्यान में रखें बिना अपने परिवार को उन समारोह में सम्मिलित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। आज का समाज धूम्रपान, अनेकों प्रकार के नशे, अपशब्दों का प्रयोग, लोभ, स्वार्थ इत्यादि के वशीभूत होकर एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगे रहते हैं। जिसके कारण समाज जिन ऊंचाइयों को छूना चाहता था वह आज संभव नहीं

हो पा रहा है। कोई व्यक्ति दुखी है तो उसे देखकर लोग अपना मुंह मोड़ लेते हैं। कहने के लिए तो भारतवर्ष में अनेकों समाजसेवी संस्थाएं कार्यरत हैं, किंतु यह सभी वर्तमान राजनीति से प्रेरित है। इसीलिए तो व्यक्ति एक दूसरे पर विश्वास करने से डरता है।

लोग अपने घरों में अपने बुजुर्गों से अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं। कई न्यूज चैनलों के माध्यम से यह पता चला है कि घर में बुजुर्गों की कोई इज्जत नहीं है।

प्राचीन काल में हमारे दादा–दादी, नाना–नानी, माता–पिता समाज के प्रमुख अंग होते थे, जिससे हम बच्चों का अनुकूल विकास होता था। यह बात प्रसिद्ध है कि बड़े–बड़े सूरमा अपने दादा–दादी की कहानियों को सुनकर तथा उससे प्रेरणा प्राप्त कर अपनी कीर्ति को स्थापित किया। किंतु आज के स्वतंत्र और एकल परिवारों में बुजुर्गों के लिए कोई स्थान नहीं है। जिसके कारण हमारे बच्चों में सामाजिक मूल्यों का, परोपकार, स्नेह, मित्रता इत्यादि का लोप हो गया है। आज का परिवेश स्वार्थ परक हो गया है। इसीलिए तो यह समाज अभिशाप बनकर रह गया है। इसके कारण लोग समाज से किसी प्रकार की अपेक्षा अब नहीं करते हैं।

सामाजिक संस्थाएं अपनी आर्थिक स्थिति को देखते हुए अपना लाभ हानि विचारते हैं। लेकिन वास्तविक रूप से वे समाज की सेवा ही नहीं करना चाहते। क्योंकि मूल्यों का अवमूल्यन हो चुका है। आज सब समाज की कोरी कल्पना में लगे हुए हैं लेकिन वह समाज आज हमसे कहीं दूर चला गया है। एक भाषा में कहें तो आज का समाज एवं समाज में रहने वाले व्यक्ति विचारों को छोड़कर, भावनाओं का गला घोंट कर, चिंतन की चिता जलाकर, मशीन के रूप में अपना योगदान दे रहे हैं। जिससे समाज का परिवेश, समाज की संस्कृति एवं संस्कार विलुप्त हो रहे हैं। इसीलिए वर्तमान समाज का परिवेश पाश्चात्यानुकरण से प्रभावित है।

संस्कार विहीन समाज – समाज में मूल्यों को संस्कार का नाम देते हैं, जिन मूल्यों के कारण मानव मूल्यवान होता है। किंतु आज के परिवेश में भारतीय संस्कृति के अनुसार सांस्कृतिक, नैतिक, सामाजिक तथा चारित्रिक एवं आर्थिक मूल्यों का अभाव दिख रहा है। जिसके कारण समाज लक्ष्यहीन दिखता है। उदाहरण के लिए 50 वर्ष पीछे जाएं तो पता चलता है कि भारतीय संस्कृति का परिदृश्य स्पष्ट दिखता था। किंतु बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह, वेशभूषा में शालीनता, वचन में मधुरता, विचारों में उदारता, सामूहिक परिवार, परोपकार जैसे मूल्यों के प्रति निष्ठावान, कर्तव्यनिष्ठा से युक्त अपने–अपने दायित्वों के प्रति सजग रहना एवं सुदृढ़ दिनचर्या के अनुसार अपने आप को ठीक रखते हुए समाज में

दीन–दुखियों की मदद करना, अंधों को सहारा देना, भूखे को भोजन देना आदि इस प्रकार के नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को समाहित करते हुए जो समाज का परिदृश्य था वह आज कहीं खो गया है। विकासवाद समाज में भौतिकवाद समाज में तथा विज्ञानवाद समाज में धार्मिक मूल्यों का कोई स्थान नहीं है। जिसके कारण हमारे उत्तरवर्ती परंपरा विपरीत राह पर चल चुकी है। जिसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ेगा। आज के समाज में संस्कार विलुप्त हो चुके हैं विनम्रता, दया, दक्षिणा का नाम मात्र ही सुनाई देता है। आज छोटे से छोटे बच्चे भी अपनी मर्यादा को छोड़कर बड़ों से तथा समाज के मर्यादित लोगों से भी अमर्यादित संभाषण करते हैं तथा मनमाने ढंग से तरह–तरह के कुकृत्य करते हैं। जिससे समाज रसातल की ओर जा रहा है।

संस्कार युक्त समाज – आज जरूरी है कि हमारे उत्तम समाज के लिए नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार प्रसार एवं प्रशिक्षण संवर्धन किया जाए। लोगों को प्रकृति से जोड़ा जाए। ईश्वर में आस्था, धर्म में निष्ठा, हाथ में परोपकार, हृदय में दया करुणा इत्यादि मूल्यों का समुचित प्रकार से समावेश होना चाहिए। जिससे मूल्य युक्त समाज विश्व में अपना अदिश स्थापित कर सके। इससे समाज में अपराध नहीं होंगे तथा विभिन्न प्रकार के संकटों से भी छुटकारा मिलेगा और समाज अपने लक्ष्य में सफल हो सकेगा। संस्कार युक्त समाज अपने लक्ष्य में सदा अग्रसर होता है। किंतु अधिक आधुनिक रीति से नहीं अपितु परंपरा के साथ संपूर्ण समाज को एक साथ पवित्रतम मूल्यों का आभास कराती है। इसीलिए कहा गया है कि– ''महाजनों येन गतः स पान्थाः''। इसका तात्पर्य है कि हमारे ऋषि मुनि मोक्ष मार्ग पर गए हैं। वही हम सबका लक्ष्य है न कि भौतिक भोग विलास मात्र।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. भारतीय संस्कृति दीपक कुमार चौखंबा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी 2014
2. प्राचीन भारतीय इतिहास सौरभ चौबे यूनिवर्सल बुक इलाहाबाद 2016
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास वाचस्पति गोखले चौखंबा विधानसभा वाराणसी 2014
4. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास कपिल देव द्विवेदी रामनारायण लाल इलाहाबाद 2016
5. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति कपिलदेव द्विवेदी विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2010
6. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति बलदेव उपाध्याय शारदा संस्थान वाराणसी 2015
7. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति वाचस्पति गोखले चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली 2016